अपने बारे में उसका ज्ञान पृथ्वी पर पुत्र के परमेश्वर होने की झलक देता है

यीशु के परमेश्वर होने के सम्बन्ध में एक प्रमाण उसकी अपनी ईश्वरीय सजगता है। यद्यपि हमारे पास यीशु के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु सुसमाचार के वृत्तांतों में दी गई गहरी बातें यह दिखाती हैं कि वह अपने परमेश्वर होने की बात से अवगत था। उसने अपनी ईश्वरीय सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता को अपनी सेवकाई में हथियारों के रूप में इस्तेमाल किया था। छुड़ाने वाले के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए उसे पता था कि क्या होने वाला है–यहां तक कि वह वर्तमान और भविष्य दोनों में लोगों के विचारों और कामों को भी जानता था।

पिता से अपने सम्बन्ध का उसका ज्ञान

लड़कपन से, सम्भवतः *बार मित्ज़्वा* की आयु से ही,[1] यीशु अपने पिता की योजनाओं में अपनी भूमिका के प्रति सचेत था। यूसुफ और मरियम को वह मन्दिर में मिला था, तो उनमें यह बातचीत हुई थी:

> ... हे पुत्र, तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है? (लूका 2:48–50)।

यीशु यूसुफ को अपना पिता नहीं कह रहा था। वह मरियम के वाक्यांश ''तेरा पिता'' और ''अपने पिता'' में विषमता कर रहा था। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यीशु अपने स्वर्गीय पिता के साथ अपने ईश्वरीय सम्बन्ध के प्रति जागरूक नहीं था। बिल्कुल ही विपरीत प्रमाण तो है!

यीशु की ईश्वरीयता के प्रकाश में पिता/पुत्र के इस सम्बन्ध का क्या अर्थ है? एक और जगह उसने कहा था, ''*मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता,*

केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे'' (मत्ती 11:27)। यह विश्वव्यापकता (''सब कुछ'') और अनन्यता (''केवल पिता ... केवल पुत्र'') की एक पुष्टि है। पिता/पुत्र के इस सम्बन्ध का गहरा अर्थ ईश्वरीय सम्बन्ध को शामिल किए बिना कुछ भी नहीं है। पुत्र के साथ पिता का यह सम्बन्ध पुत्र को अपनी इच्छा के अनुसार दूसरों पर पिता को प्रकट करने के योग्य बनाता है।[2]

यह ''ईश्वरीय पहल'' यीशु द्वारा चेलों पर की गई कुछ टिप्पणियों का आधार है। उदाहरण के लिए, संदेह करने वाले थोमा को यीशु ने बताया कि वह पिता के पास जाने का एकमात्र मार्ग था (और है)। इस पर, फिलिप्पुस ने कहा कि उन्हें पिता को देखने की अनुमति दे। यीशु का उत्तर अपनी पहचान के उसके अपने बोध का एक आश्चर्यजनक उदाहरण है:

> जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा। क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; ... (यूहन्ना 14:9ख-11क)।

वह जानता था कि वह *पिता नहीं था* अर्थात वह जानता था कि *वह पिता का पुत्र था।* दोनों का इतना गहरा सम्बन्ध है कि एक को देखने के लिए दूसरे को देखना आवश्यक है; एक की सुनने के लिए दूसरे की सुननी आवश्यक है।

एक और समय पर यीशु यह कहते हुए आगे निकल गया कि जो कुछ पुत्र करता है वह पिता भी करता है क्योंकि वे आपस में एक दूसरे को जानते हैं। पिता की ओर से जीवन और न्याय का काम पुत्र को सौंपा गया है; इसलिए पिता और पुत्र दोनों की ही महिमा होनी आवश्यक है:

> इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो। क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है ... (यूहन्ना 5:19-23)।

अपने पिता के साथ यीशु की जागरूकता इस आधार पर थी कि वह अपने पिता की तरह ही परमेश्वर था (और है)।

अपने ईश्वरीय ज्ञान के बारे में उसकी जागरूकता

एक और विषय जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है वह है मानवीय योग्यता से परे यीशु का ज्ञान। सुसमाचार के वृत्तांतों में यह इतनी बार आता है कि इसके बार-बार आने के कारण इसे आसानी से अनदेखा किया जाता है।

हम मत्ती रचित सुसमाचार से लिए गए कई उदाहरणों पर ध्यान देंगे। (1) जब यीशु ने चार लोगों द्वारा लाए गए अधरंगी आदमी को चंगा किया, तो मरकुस 2:8 कहता है कि वह इस सब को देख रहे व्यवस्था के कुछ शिक्षकों के कहने से भी पहले उनके विचारों को जानता था। (2) यीशु अपने चेलों को यह बताने लगा कि वह प्राचीनों, महायाजकों और व्यवस्था के सिखाने वालों के द्वारा ठुकराया जाएगा। *वह मारा जाएगा, परन्तु तीन दिनों के बाद मुर्दों में से जी उठेगा* (मरकुस 8:31; 9:9, 31; 10:33, 34)। (3) उसने भविष्यवाणी की था, कि उसके समय के लोगों में से कुछ लोग परमेश्वर के राज्य को सामर्थ के साथ आता देखने के लिए जीवित रहें (मरकुस 9:1)। (4) उसने अपने कुछ प्रेरितों के सताए जाने और उनकी मृत्यु का उल्लेख किया (मरकुस 10:39)। (5) वह समय से पहले जानता था कि उसकी सेवकाई को कौन सी बात प्रभावित करेगी (मरकुस 11:2-6)। (6) जब यीशु से पूछताछ की गई, तो उसका उत्तर आम तौर पर प्रश्न पूछने वालों के विचारों और आचरण के अपने ज्ञान पर आधारित था (मरकुस 12:13-17)। (7) यीशु ने मन्दिर के विनाश और उसके बाद की विपत्ति के बारे में स्पष्ट रूप से बता दिया था (मरकुस 13:1-23)। (8) वह जानता था कि यहूदा उसे पकड़वाएगा, कि पतरस तीन बार उसका इनकार करेगा और *सभी* प्रेरित "छोड़" कर चले जाएंगे (मरकुस 14:17-21, 27, 30)।

कोई कह सकता है कि मानवीय योग्यता से परे जो ज्ञान यीशु के पास था वह भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं से बढ़कर नहीं था। यीशु का अलौकिक ज्ञान अर्थात उसकी सर्वज्ञता केवल भविष्यवाणी के दान की नहीं बल्कि उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट परिणाम है: "जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:15; यूहन्ना 16:30; 17:10; 21:17 आदि भी देखिए)।

अब हम यह ध्यान देने के लिए तैयार हैं कि यीशु अपने बारे में पूरी तरह से कितना जानता था। हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में और चुने हुए (मसायाह) के रूप में अपने को जानता था। हम यह भी देख चुके हैं कि उसने पृष्ठभूमि में मसायाह होने और पुत्र होने की बात को कितनी बार रखा था (मरकुस 8:30; मत्ती 16:20)। इसके बाद हम देखेंगे कि कैसे वह एक सचेत "समयसारणी" के अनुसार अपनी पहचान प्रकट करता रहा।

पाद टिप्पणियां

[1]मिल्टन स्टेयनबर्ग, *बेसिक जुडाइज़्म* (न्यू यॉर्क: हारकोर्ट, ब्रेस एण्ड वर्ल्ड, 1947), 133. *बार मित्ज़्वा*

तेरह वर्ष की आयु में धार्मिक वयस्कपन में यहूदी नर के प्रवेश को कहा जाता है। यह शब्द, जिसका अर्थ ''आज्ञाओं का पुत्र'' है, किसी युवक पुरुष या पद की इस रीति के जश्न को भी कहा जा सकता है। [2]तु. जी. ई. लैड, *ए थियोलॉजी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 166-67. मत्ती 11:27 के सम्बन्ध में लैड ने कहा, ''*यीशु पिता को उसी तरह जानता है जैसे पिता पुत्र को जानता है।*... इसलिए यह ईश्वरीय ज्ञान के स्तर पर है।''

क्या दूसरों ने यीशु को परमेश्वर के रूप में देखा?

यीशु अपनी पहचान को जानता था। प्रेरितों ने यीशु और अन्यों से इसे सुना था। हम मानते हैं कि यीशु परमेश्वर है, परन्तु हमारा तो सौभाग्य है। क्योंकि हमने यीशु की पूरी कहानी सुनी है। हमने पवित्र शास्त्र का संपूर्ण प्रकाशन पढ़ा है। हम बाइबल के अद्भुत अन्त तक को जानते हैं और उसका पूर्वानुमान लगाते हैं।

क्या आप कभी किसी पुस्तक को पढ़कर इतने रोमांचित हुए हैं कि आप यह देखने के लिए कि कहानी का अन्त क्या हुआ, अन्त तक पढ़ने से अपने आपको रोक न पाए हों? पढ़ते-पढ़ते आश्चर्यजनक अन्त के बारे में जानकर आप वार्तालापों, विवरणों और सम्बन्धों में छुपे अर्थों की कल्पना करने लगते हैं। पहले से जानते हैं कि अन्त में हमें संतोष का अहसास होगा, परन्तु हो सकता है कि हम भूल जाएं कि इस पुस्तक के पात्र अन्त के बारे में नहीं जानते हैं। हम हैरान होते हैं कि लोग कुछ विशेष बातें क्यों करते या कहते हैं। निश्चय ही उन्हें इस बारे में अधिक पता होना चाहिए! नहीं। उन्हें अन्त की जानकारी नहीं है!

पवित्र शास्त्र को पढ़ते हुए, बहुत अधिक मान लेना आसान है। उन लोगों के कामों या बातों पर जो वास्तव में उन घटनाओं में रह रहे या लिख रहे थे, से पूरी कहानी लेकर, हम अपने मन में बने चित्र का प्रचार करते हैं।

न तो यीशु के अनुयायी और न ही उसके विरोधी इम्मानुएल अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ'' के प्रमाण के लिए उसके जीवन की घटनाओं को देखने के लिए तैयार थे। यीशु के बारे में पूर्ण सत्य के पाठकों के रूप में, हमें चौकस होकर सच्चाई का पूर्व अनुमान नहीं लगाना चाहिए। हमें चाहिए कि हम इसे अपने आप स्पष्ट होने दें। जान बूझकर हमें इस सिद्धांत को अनदेखा नहीं करना चाहिए। यीशु ने सच्चाई के पास आने का लाभ बताया है न कि समय से पूर्व इसके पूर्वानुमान का (यूहन्ना 8:32)।

''यहूदियों का राजा,'' ''मसायाह'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कई बार आत्मा की प्रेरणा रहित लोगों द्वारा यीशु का वर्णन करने के लिए किया गया हो सकता है परन्तु आवश्यक नहीं कि उनका कहने का भाव यीशु को ईश्वरीय मानना हो। इस्राएल के अतीत में राजाओं, अभिषिक्तों (मसीहों) और सामूहिक रूप में इस्राएल को भी परमेश्वर के चुने हुओं के रूप में ''परमेश्वर के पुत्र'' कहा जाता था।

किसी निश्चयात्मक, और पक्के प्रमाण के लिए हम कहां जाएं कि यीशु केवल

परमेश्वर का पुत्र ही नहीं बल्कि परमेश्वर पुत्र भी था? हम नये नियम के दूसरे लेखों में जा सकते हैं; परन्तु आवश्यकता हमें केवल सुसमाचार की चार पुस्तकों की ही है। यीशु के व्यक्तिगत जीवन और उसके उपदेश इस बात को प्रकट करते हैं कि वह वास्तव में परमेश्वर था। सुसमाचार के वृत्तांतों में हम उन प्रमाणों को देख सकते हैं जो यीशु के समय के लोगों को दिखाई नहीं दिए थे–इसलिए नहीं कि हम उनसे अधिक सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं, बल्कि इसलिए कि हमें संपूर्ण नये नियम के बाद के प्रकाशन की ओर ''आगे को देखने'' का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

जेम्स ई. प्रीस्ट

''शब्द''

इतिहास ने यह साबित कर दिया है कि कलम प्रायः तलवार से अधिक शक्तिशाली होती है। शब्दों ने राजाओं पर शासन किया, युद्ध के लिए तैयार लोगों की स्वतन्त्रता बनाए रखी और बड़े जोरदार ढंग से इतिहास का रुख बदल दिया।

''शब्द'' के लिए यूनानियों के पास तीन शब्द थे। एक का अर्थ स्वर की ध्वनि था, दूसरा मन की स्थिति को प्रकट करने वाली ध्वनि था और तीसरा हमारे पाठ वाला शब्द अर्थात वचन है। यूनानी शब्द नये नियम के महान शब्दों में से एक है, जिसे *लोगोस* कहते हैं। *लोगोस* अभिव्यक्ति तथा बुद्धि के विचार को मिलाता है। इसका अर्थ एक ऐसे शब्द के रूप में है जिसमें एक धारणा या विचार शामिल है। इस शानदार शब्द का हिन्दी में आसानी से अनुवाद नहीं किया जा सकता है। एक अंग्रेज़ी अनुवाद में भी माफट ने इसे बिना अनुवाद किए ही रहने दिया है और यूहन्ना 1:1 को इस प्रकार से लिखा है : ''आदि में लोगोस था, लोगोस परमेश्वर के साथ था, लोगोस ईश्वरीय था।''

शब्द के रूप में, मसीह परमेश्वर *स्वर* बना था। ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं'' (इब्रानियों 1:1, 2)। अब मानवीय भविष्यवक्ता थोड़ा-थोड़ा करके ईश्वरीय संदेश प्रकट नहीं करेंगे। मसीह के द्वारा, परमेश्वर मनुष्य के साथ एक नई और जीवित भाषा में बात करता है जिसे मसीह में जीवन की भाषा कहते हैं।

शब्द के रूप में, मसीह परमेश्वर *दृश्यमान* हुआ था। परमेश्वर के वचन के रूप में, मसीह परमेश्वर के दिमाग तथा दिल की तस्वीर दिखाता है। वह रहस्यमय, शक्तिमान, प्रतापी तथा प्रतापवान परमेश्वर को प्रकट करता है। वह मनुष्य के लिए संसार के अन्तर्यामी परमेश्वर को पृथ्वी पर लाता है।

100 पोर्टरेट्स ऑफ़ क्राइस्ट
हैनरी गरायपी